



# पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति बापदादा व दीदियों का शुभ प्रणाय  
**“अशरीरी वा विदेही स्थिति का अनुभव करने के लिए सदा इज़ी और अलर्ट रहो”**  
**(याद पत्र 22-10-2025)**

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा देह में रहते विदेही अवस्था का अनुभव करने वाले, कर्तापन के भान से न्यारे, सदा इज़ी और अलर्ट रह अशरीरी स्थिति के अनुभव में रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने दीपावली का यादगार पावन पर्व दीपराज बाप के साथ मंगल मिलन मनाते हुए बहुत ही अलौकिक रीति से मनाया होगा। वर्तमान समय तो हम सभी देख रहे हैं चारों ओर नये नये प्रकार की परिस्थितियां, वातावरण, प्रकृति आदि की अनेक बातें हलचल में ला रही हैं। इन सबमें रहते सदा उमंग-उत्साह बना रहे और हम विजयी वा प्रकृतिजीत बनकर रहें, उसके लिए जरूरी है देह से न्यारी, देही-अभिमानि स्थिति में रहना। बाबा कहते बच्चे, अभी आप सभी को विशेष अटेन्शन रख अशरीरी स्थिति में रहने का अभ्यास करना है। कई पूछते हैं कि अभी हमें क्या पुरुषार्थ करना है? तो वर्तमान समय बाबा का यही इशारा है कि जितना हो सके आवाज से परे, सब बातों से उपराम, न्यारा प्यारा होकर रहो, इसके लिए साइलेन्स में रहने की बहुत-बहुत आवश्यकता है। जो कुछ हम करते हैं हमें देख दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है, हमारे करने से दूसरों को भी प्राप्ति होगी।

तो सभी ब्राह्मण परिवार के प्रति बाबा और समय हमें यही कह रहा है कि अब विदेही वा अशरीरी स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए इसलिए और सभी बातों को छोड़, अनेक प्रकार के प्रश्नों को छोड़ विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाते चलो। जैसे एक सेकेण्ड में स्वीच आन और आफ किया जाता है, ऐसे एक सेकेण्ड में शरीर का आधार लें और एक सेकेण्ड में शरीर से परे अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाएं। अभी-अभी शरीर में आये, अभी-अभी अशरीरी बन जायें। आवश्यकता हुई तो शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, आवश्यकता न हुई तो शरीर से अलग हो गये, इसकी बहुत-बहुत प्रैक्टिस करनी है। मान लो अचानक बाबा का डायरेक्शन मिले कि अपने शरीर रूपी घर को छोड़, देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानि बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीटहोम में चले जाओ तो क्या जा सकेंगे या युद्ध स्थल में युद्ध करते-करते समय बीत जायेगा? अगर अशरीरी बनने में समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आयेगा! यह भी चेक करना जरूरी है। बाबा तो रोज़ हम सबके सामने ज्ञान योग का दर्पण देता है! तो जरूर आप सभी समय निकाल उस दर्पण में स्वयं को देखते और परिवर्तन करते आगे बढ़ रहे होंगे!

बाकी मधुबन वरदान भूमि में तो बाबा अनेक प्रकार की बेहद सेवायें करवा रहे हैं। यह सब मैं भी साक्षी होकर देखती और बाबा को साथी बनाकर सदा वाह बाबा वाह के गुण गाती हूँ। आप सब भी सेवाओं के साथ स्व-स्थिति पर भी अवश्य ध्यान देते होंगे। सबको हमारी बहुत-बहुत शुभ कामनाओं के साथ मधुर याद देना जी।

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़



# ये अव्यक्त इशारे



## अशरीरी व विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ

1) अशरीरी बनना अर्थात् आवाज़ से परे हो जाना। शरीर है तो आवाज़ है। शरीर से परे हो जाओ तो साइलेंस। एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आये और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। कार्य प्रति शारीरिक भान में आये फिर सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें, जब यह ड्रिल पक्की होगी तब सभी परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे।

2) जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं वैसे ही बच्चों को भी अशरीरी हो करके शरीर में आना है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर व्यक्त में आना है। जैसे इस शरीर को छोड़ना और शरीर को लेना, यह अनुभव सभी को है। ऐसे ही जब चाहो तब शरीर का भान छोड़कर अशरीरी बन जाओ और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करो। बिल्कुल ऐसे ही अनुभव हो जैसे यह स्थूल चोला अलग है और चोले को धारण करने वाली मैं आत्मा अलग हूँ।

3) जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है, ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसे मानकर चलेंगे तो देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति बन जायेगी।

4) जैसे विदेही बापदादा को देह का आधार लेना पड़ता है, बच्चों को विदेही बनाने के लिए। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते, विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बन करके कर्म कराओ। यह देह करनहार है, आप देही करावनहार हो, इसी स्थिति को “विदेही स्थिति” कहते हैं। इसी को ही फॉलो फादर कहा जाता है। बाप को फॉलो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव।

5) वैसे अशरीरी होना सहज है लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के झंझट सामने हों, कोई हलचल में लाने वाली परिस्थितियाँ हों, ऐसे समय में सोचा और अशरीरी हो जाएं, इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिए। सोचना और करना साथ-साथ चले तब अन्तिम पेपर में पास हो सकेंगे।

6) एक सेकेण्ड में चोले से अलग तभी हो सकेंगे जब किसी भी संस्कारों की टाइटनेस नहीं होगी। जैसे कोई भी चीज़ अगर चिपकी हुई होती है तो उनको खोलना मुश्किल होता है। हल्के होने से सहज ही अलग हो जाते हैं। वैसे ही अगर अपने संस्कारों में ज़रा भी इज़ीपन नहीं होगा तो फिर अशरीरीपन का अनुभव कर नहीं सकेंगे इसलिए इज़ी और एलर्ट रहो।

7) विदेही बनने में “हे अर्जुन बनो”। अर्जुन की विशेषता - सदा बिन्दी में स्मृति स्वरूप बन विजयी बना। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाले अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाले अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले अर्जुन बनो।

8) बाप के समीप और समान बनने के लिए देह में रहते विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे कर्मातीत बनने का एगजैम्पल साकार में ब्रह्मा बाप को देखा, ऐसे फॉलो फादर करो। जब तक यह देह है, कर्मेन्द्रियों के साथ इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजा रहे हो, तब तक कर्म करते कर्मेन्द्रियों का आधार लो और न्यारे बन जाओ, यही अभ्यास विदेही बना देगा।

9) जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने के लिए ग्लूकोज़ चढ़ाते हैं, ऐसे जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हो तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है, उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है।

**10)** अभ्यास करो - देह और देह के देश को भूल अशरीरी परमधाम निवासी बन जाओ, फिर परमधाम निवासी से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ, फिर सेवा के प्रति आवाज़ में आओ, सेवा करते हुए भी अपने स्वरूप की स्मृति में रहो, अपनी बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ एक सेकेण्ड से भी कम समय में लगा लो तब पास विद आनर बनेंगे।

**11)** अपने को शरीर के बंधन से न्यारा बनाने के लिए अवतार समझो। अवतार हूँ, इस स्मृति में रह शरीर का आधार ले कर्म करो। लेकिन कर्तापन के भान से न्यारे होकर कर्म करो। मैंने किया, मैं करता हूँ... इस संकल्प को भी समर्पित कर दो तो कर्म के बंधन में बंधेंगे नहीं। देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव करेंगे।

**12)** जो भी परिस्थितियाँ आ रही हैं और आने वाली हैं, उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा... क्या होगा..., इस क्वेश्चन को छोड़ दो, अभी विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ। विदेही बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती।

**13)** जैसे एक सेकेण्ड में स्वीच आन और आफ किया जाता है, ऐसे ही एक सेकेण्ड में शरीर का आधार लिया और एक सेकेण्ड में शरीर से परे अशरीरी स्थिति में स्थित हो गये। अभी-अभी शरीर में आये, अभी-अभी अशरीरी बन गये, आवश्यकता हुई तो शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, आवश्यकता न हुई तो शरीर से अलग हो गये। यह प्रैक्टिस करनी है, इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।

**14)** बापदादा अचानक डायरेक्शन दे कि इस शरीर रूपी घर को छोड़, देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीटहोम में चले जाओ तो जा सकते हो? युद्ध स्थल में युद्ध करते-करते समय तो नहीं बिता देंगे! अशरीरी बनने में अगर युद्ध करने में ही समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आयेगा!

**15)** जैसे हठयोगी अपने श्वास को जितना समय चाहें उतना समय रोक सकते हैं। आप सहजयोगी, स्वतः योगी, सदा योगी, कर्मयोगी, श्रेष्ठ-योगी अपने संकल्प को, श्वास को प्राणेश्वर बाप के ज्ञान के आधार पर जो संकल्प, जैसा संकल्प

जितना समय करना चाहो उतना समय उसी संकल्प में स्थित हो जाओ। अभी-अभी शुद्ध संकल्प में रमण करो, अभी-अभी एक ही लगन अर्थात् एक ही बाप से मिलन की, एक ही अशरीरी बनने के शुद्ध-संकल्प में स्थित हो जाओ।

**16)** चारों ओर हलचल है, व्यक्तियों की, प्रकृति की हलचल बढ़नी ही है, ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है सेकेण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लेना। तो बीच-बीच में ट्रायल करो एक सेकेण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहे वहाँ स्थित कर सकते हैं! इसको ही साधना कहा जाता है।

**17)** विदेही बनने की विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है इसलिए बापदादा कहते हैं अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिट तो नहीं जाता है? अविनाशी, अमिट तिलक रहे।

**18)** अब संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एकरस स्थिति बनाने का अभ्यास करो तब ही विश्व के अन्दर शक्ति सेना का नाम बाला होगा। जब चाहे शरीर का आधार लो और जब चाहे शरीर का आधार छोड़कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जाओ। जैसे शरीर धारण किया वैसे ही शरीर से न्यारे हो जायें, यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नम्बर लाने का आधार है।

**19)** अशरीरी स्थिति का अनुभव करने के लिए सूक्ष्म संकल्प रूप में भी कहाँ लगाव न हो, सम्बन्ध के रूप में, सम्पर्क के रूप में अथवा अपनी कोई विशेषता की तरफ भी लगाव न हो। अगर अपनी कोई विशेषता में भी लगाव है तो वह भी लगाव बन्धन-युक्त कर देगा और वह लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।

**20)** जितना अव्यक्त लाइट रूप में स्थित होंगे, उतना शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी अशरीरी बन जायेंगे, तो मानों जैसेकि चार घण्टे का आराम कर लिया। ऐसा समय आयेगा जो नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जायेंगे और शरीर को आराम मिल जायेगा। लाइट स्वरूप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में भी लाइट रूप हो जायेंगे।

21) अशरीरी बनने के लिए समेटने की शक्ति बहुत आवश्यक है। अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह के दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को समेटना है। घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो - बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। अनुभव करो कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, इसके लिये अब से अकाल तख्तनशीन होने का अभ्यास बढ़ाओ।

22) अशरीरी बनना वायरलेस सेट है। वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। जरा भी अंश के भी अंशमात्र विकार वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा इसलिए अब कर्मबन्धनी से कर्मयोगी बनो। अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बन्ध में समझो तो सदा एवररेडी रहेंगे। चेक करो - अन्दर कोई भी विकार छिपा हुआ तो नहीं है?

23) कितना भी कार्य की चारों ओर की खींचातान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिज़ी हो - ऐसे टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करके देखो। यथार्थ सेवा का कभी बन्धन नहीं होता है क्योंकि योग युक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे।

24) अन्त समय में प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे, परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद आनर होगी जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद आनर का सबूत देगी, इसके लिए समय निकालकर प्रकृति के पांचों तत्वों की सेवा करते, शुभ भावना की सकाश देते रहो।

25) कोई भी सेवा के प्लैन्स बनाते हो, भले बनाओ, भले सोचो, लेकिन क्या होगा!... उस आश्चर्यवत होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोचो। सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं।

26) जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बने, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का रेसपान्ड विदेही बनकर दो। सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो। विदेही माना देह से न्यारा। स्वभाव, संस्कार, कमजोरियां सब देह के साथ हैं और देह से न्यारा हो गया तो सबसे न्यारा हो गया, इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, इसमें कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए।

27) सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह विदेही बनने का अभ्यास करते रहो। दो चार सेकण्ड भी निकालो इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो सारा दिन बुद्धि चलती रहती है, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और अभ्यास होगा तो जब चाहे उसी समय विदेही हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेहीपन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।

28) जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है, फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ न कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़ेगी।

29) अगर सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी और जिस बात में कमजोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है।

30) जैसे कोई शरीर के वस्त्र सहज उतार सकते हो ऐसे यह शरीर रूपी वस्त्र भी सहज उतार सको और सहज ही समय पर धारण कर सको, इसका अभ्यास चाहिए। अगर वस्त्र तंग वा टाइट है तो सहज उतार नहीं सकते, ऐसे यह देह रूपी वस्त्र भी किसी संस्कार में चिपका हुआ तंग वा टाइट न हो। इसके लिए सभी बातों में इजी रहो, यदि इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य इज़ी होंगे। जितना पुराने संस्कारों से न्यारा रहेंगे उतना अवस्था भी न्यारी अर्थात् विदेही सहज बन जायेगी।

# (त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

16-10-2025

मधुबन

## गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें “सदा लवलीन स्थिति कैसे रहे ?”

(07-07-11)

बाबा ने कहा लव में लीन सहज कौन रह सकता है? जिसका संबंध और प्राप्तियों में भरपूर होगा। आप अनुभवी हैं तो जिससे गहरा संबंध होता है वह भूलते भी नहीं भूलता है, बार-बार याद आता है और जहाँ से कोई प्राप्ति होती है तो प्राप्ति वाला भी नहीं भूलता है। अगर बाबा भूल भी जाता है तो उसका कारण या संबंध में कुछ कमी है या प्राप्ति स्मृति में नहीं है इसलिए बाबा कहते हैं सिर्फ प्यार होवे नहीं लेकिन प्यार में भी लव लीन रहो यानी स्नेह में समाये रहें। तो आप सभी लवलीन हो या लवली हो? तो आप कौन हो? लवलीन। तो जो लवलीन हैं उसकी निशानी क्या होगी? उसको कभी बाबा भूल ही नहीं सकता है। वह तो लीन है। बाबा हाथ उठाता है बच्चे याद में रहते हो या कभी कभी थोड़ा माया आ जाती है। तो सभी थोड़ा चुप हो जाते हैं। ना भी नहीं करते लेकिन सदा के शब्द में थोड़ा सोचते हैं। बाबा चाहता है कि सदा लवलीन रहें। यह लवलीन अक्षर ऐसा है जो इससे ही लोगों ने कहा है हम बस लीन हो जाएं। अब उनका लव तो है ही नहीं, लीन कोई होता नहीं। हम कहते हमारा तो एक बाबा दूसरा न कोई। हम बाबा के लव में लीन होकर जो हमको प्राप्ति हुई है वह दूसरों को भी देवें इसी लगन में लगे हुए हैं। लवलीन रहने का सहज तरीका क्या है? हमने अनुभव किया, बाबा कहता है सदा मुझे साथ रखो। मुझे साथी बनाओ, अगर सदा बाबा हमारे साथ है, सदा हमारे दिल में है। उसको दिलाराम का टाइटल मिला है क्योंकि वह हमारे दिल में रहता है। इसलिए आबू में दिलवाला मन्दिर बना है दिल लेने वाला और दिल देने वालों का यादगार है।

बाबा कहता बच्चे अकेले कभी नहीं बनना। बाबा साथ है तो हम अकेले नहीं बन सकते। बाबा हमारे दिल में सदा बैठा है, याद है तो कभी भी माया आ नहीं सकती है। बाबा ने एक मुरली में कहा था जहाँ लाइट होती है वहाँ पाप नहीं होता है। जंगल में जाते हैं तो टार्च साथ में रखते हैं, जानवर आये तो उसे आंखों में लाइट डाल दो। तो माया भी अगर आती है तो उसका कारण हमारे साथ बाबा नहीं होता अकेले हो जाते हैं। वैसे भी अगर कोई डाकू आता है तो वह पहले सबको अलग करता है, साथ होंगे तो फिर उनको डर रहता है। तो हमारे साथ हमारे दिल में अगर सदा बाबा हो, माया आये और हम भगवान, तो मेहनत हो जायेगी। अगर भगवान साथ

है तो आंधी तूफान क्या करेगा। अगर कोई पावरफुल साथ होता है तो डर नहीं होता है। तो बाबा कहते हैं मुझे साथ रखो, मुझे अपना साथी बनाओ। तो आप सबके साथ बाबा है, सदा या कभी कभी अकेले हो जाते हैं। हमारे साथ तो लाइट हाउस है। स्वयं लाइट हाउस बाबा अगर हमारे साथ है तो माया की क्या हिम्मत है, आने की। आ ही नहीं सकती। और हम सदा निर्विघ्न।

इस अवस्था में रहने से मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि माया दूर से ही भाग जाती है। आगे भी नहीं आ सकती है। तो यह ध्यान रखें कि कभी अकेले तो नहीं हो जाते? अकेले होने से ही व्यर्थ संकल्प चलते हैं। व्यर्थ संकल्प ऐसे होते हैं जो जल्दी खत्म नहीं होते हैं, बार-बार आते हैं। और खास बाबा की याद के टाइम अमृतवेले आते हैं। माया उसी समय कोशिश करती है सामने आने की। लेकिन अगर हमारे साथ लाइट हाउस है तो माया की ताकत नहीं हो सकती, व्यर्थ संकल्प भी नहीं आ सकते।

आजकल की रिजल्ट में बुरे संकल्प कम हो गये हैं लेकिन व्यर्थ बहुत चलते हैं। छोटी छोटी बात में क्यों क्या कैसे,, माया की भाषा कै कै की है। यह क्यों करते, क्या हुआ, कैसे हुआ, कब तक होगा... यह कै कै की भाषा होगी। यह माया की भाषा खत्म हो जाए उसका साधन यह है कि बाबा के साथ रहें।

कभी कभी युद्ध करते करते थक जाते हैं और खुशी गायब हो जाती है। उसका चेहरा जो है वह सदा ऐसा आपको नज़र आयेगा जैसे बड़े सोच में है। खुशी नहीं है। बाबा ने हम सबको पहला पहला लेसन यह सिखाया कि तुमको भगवान मिला है, भगवान के पास क्या है, खुशी सुख शान्ति प्रेम आनंद, इसमें जो जो चाहिए वह भगवान से ही मांगते हैं। तो बाबा ने हमको पाठ पढ़ाया कि तुम भिन्न भिन्न वृक्ष की टालियां मेरे पास आईं। अभी इन सब टालियों को एक चन्दन का वृक्ष बनाना है। जो चंदन का वृक्ष बनेगा, उसकी शाखा बनेंगे तो उसमें क्या होना चाहिए। तो बाबा कहता था तुम्हारा चेहरा सदा खुशमिजाज होना चाहिए। खुशमिजाज भी खुशनसीब भी क्योंकि भगवान के बने हो। खुशी के बिना जीवन ही क्या है। बाबा ने हमको कहा बच्ची तुम्हारा चेहरा ऐसा होना चाहिए जैसे खिला हुआ गुलाब का पुष्प। कभी आपका चेहरा मुरझाया हुआ नहीं हो। अगर सोच में व्यर्थ संकल्प में होंगे तो

विचारों में खोये होंगे ना।

तो बाबा पहले डिल के टाइम आता था और एक एक बच्चे को दृष्टि देता था और याद दिलाता था तुम्हारा चेहरा कैसा होना चाहिए। बाबा देखता था कि गुलाब का पुष्प है या और कुछ है। बाबा को मुरझाई हुई सोच वाली शक्ल बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी। तो अपनी शक्ल चेक करना। बार-बार देखो मेरी शक्ल ऐसी खुशमिजाज खुशनसीब है। हमारे जैसा कोई होगा ना। भगवान हमारा बन गया। फलक से कहते हैं मेरा बाबा, तो जब भगवान मेरा हो गया, तो जहाँ भगवान है वहाँ सर्व प्राप्तियां हैं। हम मुस्कराते हैं तो दूसरे भी देखकर मुस्कराते हैं। तो यह भी सेवा है, दुःखी आत्मायें एक सेकण्ड भी मुस्करायें तो यह भी सेवा है। तो हमारा चेहरा ऐसा होना चाहिए जो कोई देखे तो वह भी मुस्कराये यानी खुश हो जाए। हम खुशनसीब हो गये हैं तो हमारे चेहरे पर वह होना चाहिए।

तो व्यवहार में प्रवृत्ति में भले रहो लेकिन यह स्मृति में जरूर रहे कि मैं ट्रस्टी हूँ, तन मन धन बच्चे सब मैंने बाबा को दे दिये हैं, मैं ट्रस्टी हूँ। जैसे टीचर्स को भी बाबा कहते टीचर सक्सेस वही हो सकती है जो अपने को समझे कि मैं निमित्त हूँ, बाबा की तरफ से निमित्त हूँ। दूसरा निर्माण और तीसरा सदा मुस्कराते रहो। कोई भी बात हो जाए क्यों क्या मैं नहीं आओ क्योंकि निमित्त हो तो तुम्हारी वाणी निर्मल हो। तो कभी मेरा पन न आये। मैं ट्रस्टी हूँ, बाबा यह सब आपका है। यह संकल्प किया है? तो सभी ट्रस्टी होकर चलते हो या मेरेपन के भान से चलते हो? जो सदा ट्रस्टी हैं वह हाथ उठाओ। मैं ट्रस्टी हूँ, निमित्त हूँ। जैसे बाबा ने बहिनों को सेन्टर दिया है, तो बहिनों का सेन्टर नहीं है, बाबा ने निमित्त बनाया है। मेरापन कभी न आये।

मधुबन वालों को तो वायुमण्डल की बहुत बहुत मदद है आप लोगों को वायुमण्डल बनाना पड़ता है। घर में कोई खुशी की खबर लेकर आता है, तो घर का वायुमण्डल कैसे बन जाता है। एकदम बदल जाता है ना। और कोई कहता है यह हो गया, ऐसे हो गया तो घर का वातावरण ऐसा हो जाता है। और यहाँ का वायुमण्डल बाबा ने कैसा बनाकर रखा है। यहाँ आने से सभी खुश हो जाते हैं। उदासी भाग जाती है। यहाँ बगीचे इसीलिए बनाया है, आप वृक्ष के नीचे बैठकर कोई भी कमी हो तो यहाँ छोड़कर जाओ। यहाँ से खुशी का खजाना शक्तियां लेकर जाओ। तो खुशी का खजाना सभी जमा कर रहे हो ना। पेपर तो आर्येंगे ना। यह बात क्यों हुई, यह कैसे हुआ.. नहीं। यह बात नहीं है पेपर है, मुझे पास होना है। बच्चों को कहते हो पेपर में खुशी खुशी से पास होकर आना। तो हम भी खुश रहे। कोई भी बात होती है, बातें तो होंगी, कलियुग का अन्त है वायुमण्डल ऐसा है, लेकिन हमको खुशी हो, उसका प्रभाव हमारे पर न पड़े। बाबा कहते हैं कुछ भी हो जाए लेकिन दुनिया वाले सोच में हैं पता नहीं कल क्या होगा और हम खुश होते

हैं कल हमारा राज्य होगा। अभी हमारे साथ भगवान है, हमें क्या परवाह और कल हमारा राज्य होगा। कुछ भी होगा तो भगवान हमें एक सेकण्ड में दृष्टि देगा और बात खत्म हो जायेगी। तो खुश रहो और खुशी बांटो। आजकल दुख अशान्ति का समय बढ़ रहा है, उस हिसाब से बिचारे बहुत सहन कर रहे हैं उसी कारण दुखी हैं। लेकिन आप उन्हीं को खुशी बांटो। हमारे पास तो खुशी है। तो यह बाबा का स्लोगन है सदा खुश रहो और खुशी बांटो। यह खुशी बांटने से बढ़ती है कम नहीं होती है। आप ट्रायल करके देखो। किसी दुखी को खुशी देकर खुश करो तो आपकी खुशी और ही बढ़ेगी कम नहीं होगी। तो सदा यही करो। खुश रहना है और खुशी बांटना है। बस यही काम करो। हम ऐसे रहें जो हमको देखकर सब खुश हो जाएं। खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी के लिए कहा जाता है खुशी जैसा कोई भोजन नहीं, खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो हेल्थ वेल्थ सब हो गया, हैपी तो हैं ही। इसलिए कभी भी खुशी नहीं गंवाओ। भगवान के बच्चे हैं, नशा है। हमारा बाबा कौन है? भगवान है। भगवान के हम बच्चे हैं, साधारण मनुष्य जैसे नहीं हैं और ब्रह्मा बाबा को देखो। ब्रह्माबाबा तो आप जैसा गृहस्थी था, बिजनेस मैन था। सब काम किये हैं। लेकिन शिवबाबा ने जब प्रवेश किया और डायरेक्शन दिया यज्ञ रचना है। तो शुरू में सिर्फ ब्रह्मा बाबा ने अपना सब कुछ लगा दिया। बाबा का ही धन था और कोई का नहीं था। एक बाबा के धन से बाबा ने यज्ञ शुरू किया। कभी बाबा को संकल्प नहीं आया, इतना विस्तार तो पीछे हुआ। लेकिन बोर्डिंग खोला, आना जाना शुरू हो गया और पैसे सिर्फ बाबा के। उस धन से यह यज्ञ रचा। बेफिक्र बादशाह। बाबा की शक्ल में कभी फर्क नहीं आया भले बेगरी पार्ट भी चला क्योंकि बाबा को निश्चय था मेरी जिम्मेवारी नहीं है, जिसने प्रवेश किया है, जिसने यज्ञ रचा है उसकी जिम्मेवारी है।

शुरू में ब्रह्मचर्य में रहना है, यह नई बात थी, इसलिए हंगामा शुरू हुआ तो मुखी लोगों ने बाबा को बुलाया कहा तुम्हें अकेले आना है। तो बाबा गया, उन्होंने कहा यह ज्ञान तुमको किसने दिया है कि पवित्र रहो। यह ज्ञान तो कोई ने नहीं दिया है। आपने यह ज्ञान कहाँ से लाया है। बाबा ने गीता खोलकर दिखाया कि लिखा हुआ है काम महाशत्रु है। यह तो आपकी गीता में है, क्या यह रांग है? अब कोई गीता को कैसे झूठा कहेगा। सब चुप हो गये। बाबा बिल्कुल निर्भय निर्वैर था, शिवबाबा की प्रवेशता थी। उस समय ब्रह्मा बाबा तो अकेला था। तो कितनी बहादुरी थी, तभी तो यज्ञ रचा। बाबा की जो प्रवेशता हुई उसी हिसाब से बाबा का चेहरा चलन ऐसी थी जैसे बेपरवाह बादशाह। तो फालो फादर। फालो सिस्टर ब्रदर नहीं। उनसे वर्सा नहीं मिलेगा। कितनी भी बड़ी अच्छी बहन हो लेकिन फालो फादर करना। अगर किसी में गुण है तो वह भी दिया किसने। बाबा ने। इसलिए फालो फादर करने से बाबा जैसा बेफिक्र बादशाह रहेंगे।

## “परदर्शन, परचिन्तन और परदोष देखने की आदत गिरती कला में ले जाती है, वह बाबा की याद में नहीं रह सकता” (10-10-06)

जब मधुबन की सीजन होती है तो सबका बुद्धियोग मधुबन में लटक जाता है। सीजन का मेवा अच्छा होता है, सेवा में भी मेवा, मधुबन का भी मेवा। सबसे मेवा कौन सा अच्छा! स्व-स्थिति को अच्छी बना के रखो। बाबा ने कहा लाइट का चोला हो, लाइट का चोला उतारना और पहनना नहीं पड़ता है। श्रृंगार भी लाइट, कितना सहज हो गया। उसमें तो टाइम लगता है, इसमें बाबा सिर्फ लाइट में रहने का आदती बना रहा है। जितना लाइट रहते हैं उतना माइट मिलती है। माइट, लाइट बना देती है। जैसे शान्ति है तो शक्ति है, शक्ति है तो शान्ति है। शान्त रहते हैं तो शक्ति मिलती है। पर शान्त रहने की टाइम अनुसार शक्ति चाहिए। जिसके पास शान्त रहने की शक्ति उसको पता है अभी मेरे को क्या करने का है। पूछने, मूँझने की बात ही नहीं है। शान्त रहने की शक्ति 100 काम अपने आप करती है। मुझे सिर्फ शान्त रहने का काम करना है। यह अनुभव की बात है। मैं हमेशा कहती हूँ शान्त रहो, हो जायेगा, हो जाता है। ऐसे अभ्यास करके आओ बाबा के सामने तो बहुत प्यार करता है, मेरे बच्चे मेरे साथी बन गये।

मुरली में जो ज्ञान है, वो हमारे काम लायक है, सतयुग में देवताओं के काम लायक नहीं है। द्वापर कलियुग में न कोई सुनाने वाला होगा, न सुनने वाला होगा। अभी तक भी कितनी अच्छी दुनिया थी, तेरा मेरा था ही नहीं, सब एक बराबर थे। भारतवासियों ने जिन्होंने 84 जन्म लिया है, इतना दुःख नहीं पाया है, जितना अभी दुनिया में है।

अभी सभ्यता क्या कहती है? सभ्यता, मर्यादा, नियम। काम ऐसे करें जो कुल का नाम बाला हो। यह है ईश्वरीय कुल, शिव वंशी ब्रह्माकुमार-कुमारी। हरेक बाबा का बच्चा जिसने ऊंची स्थिति को पाया है, उन्हें नशा है कि बाबा के बने हैं तो बाबा का नाम बाला करना है। एक-एक बाबा के बच्चे का नाम करोड़ों के बीच बाला होगा। लोग दूँदेंगे कि यह किसका बच्चा था।

दो बातें हैं नुकसान-कारक, 1- सुस्ती और 2- बहाना देना। बहाना माना झूठ। मान-शान मिला, पैसा मिला उसको ज्यादा इम्पार्टेंस देगा। इस ऊंची पढ़ाई में कमाई है, यह समझ न होने के कारण पढ़ाई में भी सुस्ती आती है। कमाई महसूस हो तो

सुस्ती नहीं आयेगी। बड़ी खुशी होगी, मुरली पढ़ते-पढ़ते नाचना, फिर चलते-फिरते नाचना, बाबा ने आज क्या सुनाया है। बाबा अभी साकारी, आकारी, निराकारी दुनिया की समझ दे रहा है। यह देवताओं को भी नहीं पता है। इस ज्ञान का अनुभव करने के बगैर नशा नहीं चढ़ता है। अनुभव ही नहीं किया तो नयनों में नशा नहीं है। नशा ही नारायण बनाता है। संगमयुग है, पद ऊंचा पाना है तो यह करो। पता है माया भी विघ्न डालेगी, हम यह समझ गये हैं। ख्याल आने नहीं देंगे। जिस ख्याल में परचिन्तन, परदोष है माना माया है। लोभ मोह तो छोड़ा लेकिन परचिन्तन, परदोष अन्दर जैसे घुस गया वह बाबा को याद करने नहीं देता। अपने से पूछो याद में खलल कौन डालता है! परदर्शन, परचिन्तन और परदोष अगर देखा तो गिरती कला शुरू हो गयी। पर दोष तो बहुत खतरनाक है, खुद का दोष देखने का टाइम नहीं मिलेगा। अन्दर ऐसे घुसता है जो बुद्धि ठीक काम नहीं करेगी। न सेवा करने देगा, न योग लगाने देगा। अन्तर्मुखी होकर हाँ-हूँ करेंगे, पर सामने नहीं आयेगे। जो भी हैं, जैसे हैं, बाबा के सामने तो आये।

बाबा हमको क्या समझता है और हम अपने आप को क्या समझते हैं! जो करना है वो बाबा करायेगा और वही मुझे करना है। भगवान कितना अच्छा है, कुछ संकल्प नहीं करो, जहाँ भी जाओ सेवा खड़ी है। दिल से बाबा को याद करो, कोई माया नहीं आयेगी।

बाबा ने कभी भी पैसे से काम नहीं लिया। बाबा ने एक बार कहा मैं तुम्हें छुट्टी नहीं दूंगा, तू एक रूपया भी अपने पर खर्च कर। सतयुगी राजाई क्या बड़ी बात है, अभी कितनी बड़ी राजाई है! हम खुश तो जहान खुश! यह है राजाई। हम न खुश हैं तो बाबा भी हमारे से खुश नहीं है। जिसने भगवान को खुश नहीं किया वो खुशनसीब हो नहीं सकता। हमें यह पता है कि भगवान की खुशी किसमें है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने अपना संकल्प, अपना जी जान बच्चों की सेवा में दिया। अभी भी अव्यक्त होकर दे रहा है, सब काम कर रहा है, कहता है तुम फिकर न करो। अरे बाबा आप हो तो हमें क्या फिकर! बेफिकर रहने वालों को कहता है राज्य करना। कोई भी फिकर करने वाला राज्य पद पायेगा ही नहीं। ऐसे ज्ञान से खेलते रहना। अच्छा।

## “मैं सदा बाबा की गोद में रहती हूँ, दुनिया की कोई हस्ती मुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती” (दादी जी का अनुभव)

मैं आप सबको अपना अनुभव सुनाती - हम जब बाबा के पास आये तो हमने पहले दिन ही कहा “मेरा तो एक बाबा”, वह दिन और आज का दिन मेरे जीवन में किसी आत्मा के प्रति संकल्प मात्र भी खिंचाव नहीं हुआ। मैं समझती हूँ सपने में भी कोई आत्मा ने मुझे आकर्षित नहीं किया होगा। मैं सारे दिन में हजारों को देखती हूँ.. पर मैं देखते भी नहीं देखती। मेरे सभी प्यारे मित्र हैं, मेरा बहुत प्यार है, ममता भी है, इसमें कोई शक नहीं, पर मैं कहती हूँ, मेरा किसी से भी कुछ नहीं। मेरी सूक्ष्म में भी कभी किसी के प्रति वृत्ति नहीं गई है। आप लोग तो वाचा में चले जाते, मैं तो कहती सेकेण्ड मात्र भी मुझे किसी की आकर्षण नहीं हुई है। मुझे कोई हस्ती, हस्ती दिखाई नहीं पड़ती। मेरे लिए सब कुछ एक बाबा है, दुनिया में कोई हस्ती नहीं। मैं बसती हूँ एक बाबा तेरी गोद में। मेरी और कोई बसती नहीं। आप यहाँ बसते, हम सदा वहाँ बसती। आप सब भी ऐसे सर्व कामनाओं से मुक्त हो जाओ, इसका नाम है योगी। अगर किसी भी प्रकार की कामना है तो वह कामना सामना करायेगी, फेल कर देगी। तो जीवनमुक्ति माना ही सर्व कामनाओं से मुक्त। समझो, मुझे बहुत नींद करने की भी कामना है तो वह सुस्ती भी मेरे लिए विघ्न है। मुझे किसी के प्यार की कामना है तो वह भी मुझे नीचे लायेगी। मुझे पहनने का, खाने का शौक है तो वह भी नीचे लायेगा इसलिए त्यागी माना ए टू जेड सब त्याग। मुझे सर्विस का चांस मिले यह भी कामना है, मुझे गद्दी मिले, यह भी कामना है इसलिए अगर जीवनमुक्ति का मजा लेना है तो जीवन से कामनाओं का त्याग करो। अगर कोई कामना होगी तो जरूर उसकी फीलिंग दिल में आयेगी। अगर फीलिंग आई तो यह भी व्यवहार शुद्धि नहीं। जहाँ कामना है वहाँ शुद्धि नहीं इसलिए बाबा ने हमें जीते जी मरना सिखलाया है। हम दुनिया से मरे, ब्राह्मण कुल से भी मरे, तब हमारी यह नई जीवन है। कईयों में हंसने बहलने की भी कामना होती, इसका मतलब हम हठयोगी हैं, नहीं। हंसो बहलो सब करो परन्तु मर्यादा में रहकर। त्यागी माना कम्पलीट त्यागी। नींद का त्याग, दुनिया के वायब्रेशन का त्याग, सखे-सम्बन्धियों का त्याग। खान-पान, फैशन का त्याग, मनपसन्द काम हो, इसका भी त्याग। त्याग माना मन की जो पसन्दगी है,

उन सबका त्याग। अगर हम मन के पसन्दगी से चले तो दूसरे के पसन्दी अनुकूल नहीं चल पायेंगे। सेवाधारी माना दूसरे के पसन्दगी अनुकूल अपने को चलाना। मुझे बाबा के पसन्दी अनुकूल चलना है। मैं बाबा की पसन्दी अनुकूल चलूँगी तो बाबा हर पल मुझे शक्ति देगा। मुझे अपनी नेचर वा प्रकृति अनुकूल नहीं चलना है, मुझे बाबा की मर्यादाओं, श्रीमत अनुकूल चलना है, यह है बाबा की प्रेरणा। प्रेरणा में हैं दुआयें। मनमत में हैं बद-दुआयें। जहाँ मनमत के कारण एक की भी बददुआ मिलती वहाँ रिकार्ड की मार्क्स कई गुना खत्म हो जाती। यही मंजिल है, इसको ही कहा जाता सम्पूर्ण समर्पण। ऐसे समर्पण बनो तब जीवन में खुश रहेंगे, प्रसन्न रहेंगे। नहीं तो चित्त प्रसन्न नहीं रहेगा, चित्त चंचल होता रहेगा। आप सबने एक छोटा मिसाल सुना होगा – कहते हैं कृष्ण को इतनी रानियां थी फिर भी वह बाल ब्रह्मचारी कहलाया। जनक राजा राजाई करते भी अपने को जीवनमुक्त कहलाया। ऋषियों के लिए कहते वह खाते पीते भी निराहारी थे। वास्तव में यह सब स्टेज इस समय की हमारी है। हम सब ब्रह्मा बाबा के इतने बच्चे बहन भाई हैं.. बूढ़े जवान सब कहते मैं बच्चा हूँ, तो सब बाल ब्रह्मचारी हैं। बाबा कहते आप सब आत्मायें बिन्दू हों, तो हम इतने हजारों को देखते भी बिन्दू को देखते तो हम सबके बीच रहते बाल ब्रह्मचारी हुए। जब हम बिन्दू हैं तो इतने सबके साथ रहते भी बाल ब्रह्मचारी हैं। फिर खाते पीते सब कुछ हैं लेकिन बुद्धि में है हम शिवबाबा आपके भण्डारे से जो मिला वह खाते इसलिए हम खाते पीते-निराहारी हैं क्योंकि अपनी वृत्ति नहीं है। फिर हम इतने बड़े कार्य व्यवहार में आते, सारा व्यवहार करते विदेही जीवनमुक्त हैं। हमारा किसी से कर्म का खाता नहीं। किसी से भी संस्कारों का टक्कर नहीं, ऐसे हम विदेही हैं। सबसे बड़ी मंजिल है कि हमारा किसी से भी खाता न बने। जैसे मैं बीमारी को खुशी से चुक्तू करती, कर्म का हिसाब-किताब समझकर, ऐसे जो भी कर्म के खाते हैं, कुछ भी कर्म के लेन-देन का खाता है, वह भी खुशी से चुक्तू करना है। यह चुक्तू करना ही हम योगियों का पुरुषार्थ है। हम योगी हिसाब चुक्तू करेंगे, हम किसी से खाता बना नहीं सकते। अच्छा। ओम् शान्ति।